माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 5 जून 2016 को पानीपत में महाराणा प्रताप जयंती समारोह में दिया गया भाषण।

आज का यह इतना बड़ा आयोजन, आप पीछे देखिए अभी भी इतनी बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं। इस आयोजन के योग्य अध्यक्ष हरियाणा सरकार के शिक्षा एवं पर्यटन मंत्री श्री रामबिलास शर्मा जी, मुख्य संसदीय सचिव श्री श्याम सिंह राणा जी, पानीपत ग्रामीण के विधायक श्री महिपाल ढांडा जी, अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा की कार्यकारिणी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह तंवर जी, अखिल भारतीय क्षत्रीय महासभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गजेन्द्र सिंह जी और आखिर में वह प्रमुख व्यक्तित्व जिसके प्रयास से और आप सबके सहयोग से यह इतना बड़ा कार्यक्रम यहाँ पर आयोजित हुआ है–कार्यक्रम के संयोजक श्री बदन सिंह राणा जी, क्षेत्र के और बाहर के सभी उपस्थित महानुभाव, पत्रकार बंधुओ तथा इतनी बड़ी संख्या में विभिन्न स्थानों से पधारे हुए भाइयो और बहनो!

आप सबको इकट्ठा देखकर हरियाणा के बारे में और अपने देश व राष्ट्र के बारे में बहुत अच्छी भावनाएँ मेरे हृदय में उतरी हैं। अभी रामबिलास जी बहुत अच्छी बात कह रहे थे कि उनकी बैटरी आपसे चार्ज होती है। इसी तरह यह भी कहा जाता है कि आप सबकी बैटरी उनसे चार्ज होती है। लेकिन मैं एक तीसरी बात कहना चाहता हूँ कि हम सबके माध्यम से परम प्रिय राष्ट्र की बैटरी चार्ज होनी चाहिए। जब तक अपने प्रिय देश और राष्ट्र की बैटरी चार्ज नहीं होती तब तक महाराणा प्रताप जैसे वीर शिरोमणि की जयंती मनाने का कोई उद्देश्य नहीं है।

आज सच में परिस्थिति मौसम के हिसाब से ठीक नहीं है। पूरे देश में गर्मी पड़ रही है, हरियाणा में भी पड़ रही है और ज्यादा ही पड़ रही है। लेकिन इस गर्मी का प्रभाव आपके यहाँ पर उपस्थित होने में कोई बाधा या कोई रूकावट पैदा नहीं कर सका। आज हरियाणा में घरों में भी कहते हैं कि बाहर मत जाओ, जरा वातावरण ठीक नहीं है। सरकार और प्रशासन ने भी धारा 144 लगा रखी है। 144 से क्या होगा? कोई किसी प्रकार की परेशानी होगी, ऐसा आभास तो मुझे नहीं है और हरियाणा में हो भी नहीं सकता क्योंकि हरियाणा की जनता बहुत राष्ट्रभक्त है। वह अपने हरियाणा को और पूरे राष्ट्र को प्रेम करती है। लेकिन जब ऐसी स्थिति समाज के अंदर बनती है तो मन में डर तो पैदा होता है।

चंड़ीगढ में तो मैने देखा कि आज रविवार के दिन भीड़ बहुत कम थी। वैसे रविवार का दिन छुट्टी का दिन होता है, सुखना लेक पर बहुत बड़ी संख्या में लोग आते हैं। लेकिन जब आज मैने छत पर खड़े होकर देखा तो सुखना लेक पर ज्यादा भीड़ नहीं थी। उसका कारण सिर्फ एक था कि समाज के अंदर ऐसा वातावरण बन गया है कि आज घर से बाहर मत जाओ। ये सब बातें मैं इसलिए कह रहा हूँ कि गांव के अंदर तो वहम और ज्यादा होगा। तीन जिलों में तो इसका वहम बहुत ही ज्यादा होगा। लेकिन उस भय की चिंता न करते हुए आप सब इतनी बड़ी संख्या में यहाँ पर उपस्थित हैं, इससे मैं अंदाजा लगाता हूँ कि अगर महाराणा प्रताप और उनके कामों के प्रति इतनी

भक्ति आपके हृदय में रही और महाराणा प्रताप के प्रति आपकी श्रद्धा इसी प्रकार से जागती रही तो हरियाणा क्या पूरे देश का भी कोई बाल बाँका नहीं कऱ सकता। इस भारत को कोई खत्म नहीं कर सकता।

आप सब भाई–बहनों से मैं यह निवेदन करना चाहता हूँ कि हरियाणा एक ऐसा प्रदेश है जो आज की दृष्टि से और प्राचीन दृष्टि से भी बहुत महत्वपूर्ण रहा है। यह भगवान की भूमि है। भगवान ने खुद कुरूक्षेत्र में आकर गीता का संदेश दिया। सरस्वती नदी यहाँ है। मैं इस प्रदेश से बहुत प्रभावित हुआ हूं। पानीपत जहाँ पर आप यह कार्यक्रम कर रहे हैं इसका तो कहना ही क्या है। यहाँ पर कई युद्ध हुए। उनमें यह हो सकता है कि भारतवर्ष की सेना, हमारे मराठों की सेना पानीपत के युद्ध में अहमदशाह अब्दाली से हार गई हो, लेकिन मानसिक रूप से उस अहमदशाह अब्दाली की हालत मराठों की सेना ने ऐसी कर दी थी कि वह अहमदशाह अब्दाली दिल्ली के ऊपर राज करना भूल गया और वापिस अफगानिस्तान चला गया। यह पानीपत की भूमि हमें हमारा इतिहास बताती है और हमारा मस्तक ऊँचा करती है।

जहाँ तक महाराणा प्रताप का सवाल है वे जाति के लिए काम नहीं करते थे। अगर महाराणा प्रताप अपनी जाति के लिए काम करते होते, राष्ट्र उनके ध्यान में नहीं होता, राष्ट्र की गुलामी अगर ध्यान में नहीं होती, मुगल राजाओं का साम्राज्य जो यहाँ पर था उनको अगर उन्होंने चुनौती नहीं दी होती तो वे वीर शिरोमणि नहीं बनते। इतने वर्षों के बाद भी महाराणा प्रताप के प्रति हम जो श्रद्धा अर्पित करते आ रहे हैं उसका कारण ही यह है कि महाराणा प्रताप संपूर्ण राष्ट्र के थे, संपूर्ण समाज के थे, संपूर्ण देश के थे।

मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि भारतवर्ष के जितने भी नागरिक हैं, वे देश की गुलामी का कारण नहीं हैं। हमारी गुलामी का कारण हमारे राजा थे। आप कल्पना करो कि जब देश 1947 में स्वतंत्र हुआ, माउंटबेटन जो यहाँ पर राज देख रहा था और वापस इंग्लैंड गया, उस समय वह 565 राजाओं को चार्ज देकर गया था कि हमने 565 राजाओं से राज्य लिया था, उन 565 राज्यों को इकट्ठा करके हम यहाँ पर राज कर रहे थे, अब क्योंकि हम जा रहे हैं जो तुम सब अपने राज्य संभालो। यह 1947 की कहानी है। आप सोच सकते हो कि देश के 565 राजा अगर इकट्ठे होकर अपने–अपने राज्य का दंभ छोड़कर, संगठित होकर अगर चुनौती देते तो भारतवर्ष के अंदर कोई बाहर का राजा राज कर सकता था क्या? आप जरा देखो तो पृथ्वीराज चौहान अगर आए तो उनका साथ जयचंद ने नहीं दिया, महाराणा प्रताप अगर आए तो उनका साथ मानसिंह ने नहीं दिया। अन्य राजा भी एक–दूसरे के प्रति ऐसा ही करते थे।

झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई से 1857 में जब अंग्रेजों ने कहा कि आपकी झाँसी हमें चाहिए क्योंकि आपकी स्वयं की कोई औलाद नहीं है तो अकेले झाँसी की रानी ने अंग्रेजी साम्राज्य को चुनौती दे दी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी। वह बलिदान हो गई लेकिन मरते दम तक झाँसी नहीं दी। एक वीरांगना झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के साथ यह हुआ। उसका साथ अगर सभी राजाओं ने दिया होता तो देश पर अंग्रेज राज नहीं करते।

असल में मैं कहना यह चाह रहा था कि राष्ट्र में जितनी जनता है, जातियों के अंदर बँटी हो सकती है, अलग–अलग भाषाएँ हो सकती हैं, अलग–अलग मौसम, अलग–अलग वेशभूषाएँ हो सकती हैं, उनकी प्रकृति अलग–अलग हो सकती है लेकिन भारतवर्ष की जनता हमेशा एक होकर रहती है।

जरा विचार करो छत्रपति शिवाजी महाराज को, उनकी सेना में कौन थे? वनवासी थे। वे उनकी सेना थे। महाराणा प्रताप की सेना में कौन थे? भील लोग थे, जिनको आप लोग लुहार कहते हैं। राजस्थान में वे बहुत बड़ी संख्या में रहते हैं। वे गाड़ी पर चलते हैं, इधर–उधर घूमते हैं, जिन्हें गड़िया लुहार कहते हैं। वे लोहे का काम करते हैं। ये भील और लुहार महाराणा प्रताप की सेना में थे।

इसलिए आज भारतवर्ष को जब फिर से चमकाने की जरूरत है तो इस जनता को एक करने की जरूरत है। आपकी अपनी–अपनी प्रवृति के हिसाब से आपकी सब बातें अलग हो सकती हैं। आपकी जाति अलग हो सकती है, आपका गाँव अलग हो सकता है, आपका राज्य अलग हो सकता है, आपकी भाषा अलग हो सकती है लेकिन भारत सबका एक है। हम भारत के अंग हैं। किसी अंग को अगर पीड़ा होती है तो पूरे शरीर को पीड़ा होती है। भारतवर्ष के किसी भी अंग में किसी प्रकार का कष्ट या तकलीफ होगी तो पूरे भारत को तकलीफ होगी। इसी भाव को लेकर महाराणा प्रताप जीए थे।

जरा महाराणा प्रताप के जीवन को देखो, उन्होंने अपने जीवन में कभी समझौता नहीं किया। अगर अकबर मानसिंह को सेनापति बना सकता है तो महाराणा प्रताप को तो पता नहीं क्या बना देते? उनकी हालत तो यह थी कि बच्चों के लिए घास की रोटी बनानी पड़ी। वह भी जंगली बिलाव आया और छीनकर ले गया और बच्चे देखते रह गए। यह हालत महाराणा प्रताप की थी। लेकिन महाराणा प्रताप ने कभी समझौता नहीं किया।

आप महाराणा प्रताप को तो छोड़िए, महाराणा प्रताप का जो घोड़ा था–चेतक, जिसकी वे सवारी करते थे, उसकी स्वामी भक्ति तो देखिए। वह कितना भक्त था। हल्दी घाटी के अंदर जब उसको यह लगा कि महाराणा प्रताप घायल हो गए हैं और मूर्छित हो सकते हैं, तो वह चेतक उन्हें वहाँ से लेकर भागा। एक टाँग तक टूट गई। लेकिन इसके पश्चात भी वह 18 फुट लम्बी छलांग लगाकर नाला पार कर गया और महाराणा प्रताप को बाहर ले गया। जब उनको सुरक्षित पहुँचा दिया तब फिर चेतक ने अंतिम साँस ली। कितना वफादार था चेतक।

महाराणा प्रताप तो अपने देश और राष्ट्र के प्रति वफादार थे ही। उनका एक हाथी था। उस हाथी का नाम उन्होंने आदमी पर रखा था–रामप्रसाद। वह हाथी इतना वीर था कि हल्दी घाटी के अंदर अकबर की सेना के 13 हाथियों को उसने अकेले मार दिया। अकबर के सैनिकों ने जब 13 हाथियों को मारते हुए उस हाथी को देखा तो सारे हाथियों को इकट्ठा करके उस पर आक्रमण करवा दिया। जब सारे हाथियों ने आक्रमण किया तो भी वह मरा नहीं, घायल हो गया। और जब वह घायल हुआ तो अकबर की सेना ने उसे बंदी बना लिया। जब उसे बंदी बना करके रखा, तो जरा गौर से सुनिए, जब उस घायल

हाथी को कुछ खाने के लिए दिया जाता तो उसने खाना स्वीकार नहीं किया। उसने कहा कि मैं तुम्हारा खाना नहीं खाऊँगा। वह मर गया लेकिन उनका खाना नहीं खाया। इतना स्वामीभक्त, इतनी प्रतिज्ञावान था हाथी। ऐसा ही था चेतक, ऐसे ही थे महाराणा प्रताप। आप जरा विचार तो कीजिए कि इस तरह की भावना की आज भी जरूरत है कि नहीं? वह भावना अभी भी आपके मन के अंदर है और यह हमेशा बनी रहनी चाहिए।

बदन सिंह राणा जी जब मेरे पास आए थे, इन्होंने इस कार्यक्रम के बारे में कहा तो परिस्थिति को देखते हुए मैने मना किया कि नहीं रहने दीजिए। लेकिन जब मुझे इनके बारे में पता लगा कि ये तो पूरी तरह महाराणा प्रताप के भक्त हैं तो हां कर दी। ये पुलिस के अंदर रहे हैं, ये SHO भी रहे, DSP भी रहे और SP भी रहे हैं। वैसे तो पुलिस के लोगों से ज्यादा देशभक्ति और जनसेवा की अपेक्षा है, लेकिन कई बार ऐसा कम देखने को मिलता है। लेकिन बदन सिंह राणा में जो महाराणा प्रताप के प्रति भाव है, उस भाव को देखकर मैने हाँ की और यहाँ आने के पश्चात मैं देखता हूँ, आप सब लोगों की इतनी बड़ी उपस्थिति इस बात को प्रकट करती है कि आप महाराणा प्रताप की शान, पानीपत का गौरव और हरियाणा के सम्मान को कभी आँच नहीं आने देंगे।

दो–तीन बातें मेरे सामने रखी गई थीं। उनके बारे में आपके शिक्षामंत्री ने ही आपको बता दिया। आपका जो मुख्य चौक है वह महाराणा प्रताप चौक के नाम से होगा। वहाँ पर उनकी प्रतिमा होगी। उन्होंने धर्मशाला की भी बात कही है। किसी भी स्थान पर धर्मशाला बनानी है तो उसका नक्शा, सारी चीजें तैयार करनी पड़ती हैं, वह भी उन्होंने बताया है। आप उसको तैयार करिए। तैयार करने के पश्चात एक सुंदर और भव्य धर्मशाला बनाने के लिए मुझे ऐसा लगता है कि इतनी बड़ी संख्या में आप सब लोग यहाँ पर उपस्थित हैं, रामबिलास जी ने आप सबको अवसर दिया है, इसलिए आपकी यह धर्मशाला बनने में कोई दिक्कत नहीं आएगी। लेकिन अगर किसी तरह की दिक्कत आती है तो वहाँ मैं राज्यपाल के नाते आपके लिए तैयार हूँ। मेरी बहुत–बहुत शुभकामनाएँ। आए हुए लोगों को धन्यवाद।